भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सोसायटी की 85वीं वार्षिक आम बैठक

85th ANNUAL GENERAL MEETING OF THE ICAR SOCIETY

डॉ. चरण दास महंत

केन्द्रीय कृषि एवं
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री
का अभिभाषण

Address by

Dr Charan Das Mahant

Union Minister of State for Agriculture and
Food Processing Industries

15 जनवरी 2014
15 January 2014

स्थान : राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर,
देव प्रकाश शास्त्री मार्ग, नई दिल्ली
Venue : National Agricultural Science Centre Complex
Dev Prakash Shastri Marg, New Delhi

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन, नई दिल्ली
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI

श्री शरद पवार जी, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री और भाकृअनुप सोसायटी के अध्यक्ष; राज्यों के कृषि मंत्री और सोसायटी के गणमान्य सदस्य; मेरे साथी श्री तारिक अनवर, राज्य मंत्री; डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भाकृअनुप; श्री अरविन्द कौशल, अपर सचिव, डेयर और सचिव, भाकृअनुप; श्री पी.के. पुजारी, अपर सचिव और वित्तीय सलाहकार, डेयर; विशिष्ट आमंत्रित अतिथि, परिषद के अधिकारीगण, प्रेस और मीडिया के प्रतिनिधियों; देवियो और सज्जनो।

परिषद की 85वीं वार्षिक आम बैठक में भाकृअनुप सोसायटी के सभी सदस्यों और गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है और मैं आप सभी को नववर्ष 2014 की हार्दिक शुभकामनायें देता हूं। कृषि, किसानों और राष्ट्र की सेवा में समर्पित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की यात्रा 85वें वर्ष में पहुंच चुकी है। इसका श्रेय राष्ट्रीय नेतृत्व, चाहे राजनीतिक हो या अनुसंधान के क्षेत्र में, वैज्ञानिक समुदाय की लगन और किसानों की कड़ी मेहनत को जाता है। इससे भारतीय कृषि में संपूर्ण बदलाव और बहुआयामी विकास संभव हुआ तथा खाद्य सुरक्षा में मजबूती आयी। एक अरब से अधिक आबादी की जरूरतें पूरी करने के बावजूद खाद्य निर्यात में वृद्धि बनाये रखना हमारे लिए गर्व की बात है।

भाकृअनुप की इस यात्रा के साथ-साथ नई चुनौतियां भी उभरकर सामने आ रही हैं। इनमें जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, दूसरे स्तर की समस्याएं, नये परजीवियों का उद्‌भव, जैव सुरक्षा मुद्‌दे, व्यापार का बदलता स्वरूप, कृषि उत्पादों में प्रतिस्पर्धा और कृषि आय में बढ़ोतरी आदि का विशेष तौर पर उल्लेख किया जा सकता है। इन परिस्थितियों के मद्‌देनजर, अनुसंधान, शिक्षा और प्रौद्योगिकी प्रसार के हमारे प्रयासों में तेजी की आवश्यकता है। प्रर्याप्त निवेश के साथ नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियों का विकास, कृषि में सतत् वृद्धि एवं विकास के लिए आवश्यक है।

महोदय, लगभग एक दशक तक आपके सक्षम नेतृत्व में न केवल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद बल्कि देशभर की कृषि में चहुंमुखी विकास हुआ है। देश में आधुनिक अनुसंधान के आधार को मजबूती देने के लिए कृषि जैवप्रौद्योगिकी एवं जैविक और अजैविक दबावों में उन्नत अनुसंधान के लिए आधुनिक सुविधाओं वाले संस्थानों की स्थापना की गयी है। कृषि विज्ञान केन्द्रों की निरंतर बढ़ती संख्या, जो अब बढ़कर 637 हो गयी है, से प्रसार कार्यक्रमों की प्रभावशीलता में तेजी आयी है। दसवीं और ग्यारहवीं योजना के दौरान शुरू की गयी दो नयी पहलें-जलवायु समुत्थानशील कृषि पर राष्ट्रीय पहल यानी निक्रा और राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना यानी

एनएआईपी से वांछित परिणाम प्राप्त हुए हैं। नयी प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से देश के कृषि उत्पादन में निरंतर बढ़ोत्तरी होना सुखद है।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों में गरीबी उन्मूलन के साथ वृहद स्तर पर समग्र वृद्धि दर प्राप्त करना शामिल किया गया है। इसके साथ स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार, बच्चों की स्कूलों तक पहुंच, उच्च शिक्षा की उपलब्धता और शिक्षा के स्तर में सुधार, हुनर विकास आदि भी शामिल हैं। आज ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश युवा रोजगार की तलाश में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं, यह चिंता की बात है। इसका कारण है खेती-बाड़ी से घटता मुनाफा या फिर अन्य रोजगारों से ज्यादा कमाई। हम सबके समक्ष यह प्रश्न है कि खेती को कैसे युवाओं के लिए आर्कषक बनाया जाये और कृषि को बचाया जा सके? इस दिशा में सही कदम उठाते हुए देश के उच्च कृषि शिक्षा प्रदान करने वाले कृषि संस्थानों ने उद्यमशीलता और कौशल विकास के नये प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किये हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि देश के विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करते भाकृअनुप सोसायटी के गणमान्य सदस्य कृषि विकास के विभिन्न मुद्दों एवं चुनौतियों पर चर्चा करके आवश्यक पहल करेंगे ताकि कृषि के माध्यम से गांवों में खुशहाली आ सके।

मैं वार्षिक आम बैठक की सफलता की कामना करता हूं।

धन्यवाद !

Hon'ble Union Minister of Agriculture and Food Processing Industries and President of the ICAR Society, Shri Sharad Pawar Ji, Ministers of Agriculture from States and distinguished members of the Society; members of the ICAR Governing Body; my colleagues, Minister of State, Shri Tariq Anwar; Dr Ayyappan, Secretary, DARE and DG, ICAR; Shri Arvind Kaushal, Additional Secretary, DARE and Secretary, ICAR; Shri P.K. Pujari, Additional Secretary and Financial Advisor, DARE; special invitees, Officials of the Council, Representatives of Press and Media, Ladies and Gentlemen!

It is my pleasure to welcome all the members of the ICAR Society and distinguished guests to 85th Annual General Meeting and wish you a very Happy New Year-2014. The ICAR is approaching 85th year of its journey in the service of agriculture, farmers and the nation. It goes to the credit of the national leadership, be it political or research, the dedication of the scientific community and of course, the sweat and hard work of the farmers, that transformed the state of Indian agriculture with multi-faceted developments which strengthened our food security. I feel that feeding a population of over a billion and also maintaining an upward trend in food exports, is a feat to be lauded by one and all.

As the journey of ICAR continues, new challenges also keep emerging. The climate change, natural resource degradation, second generation problems, emergence of new host-parasite complex, concerns of bio-safety, changing trade regimes, competitiveness of farm produce, and improving farm income, are a few of them. Under these circumstances, our efforts on research, education and technology dissemination have to go on vigorously. Innovations in approach for generating innovative technologies supported by adequate investments, hold the key to sustainability of agricultural growth and development.

Sir, under your able and visionary leadership, spanning nearly a decade, not only the ICAR, but agriculture in the country has witnessed an all-round growth and development. The foundation has been laid for upstream research with the establishment of new state-of-the-art institutions for agricultural biotechnology and biotic and abiotic stresses. The addition of Krishi Vigyan Kendras, raising their number to 637 in the country, has improved the

effectiveness of outreach programmes. The new initiatives, National Initiative on Climate Resilient Agriculture (NICRA) and National Agricultural Innovation Project (NAIP) launched during X and XI Plans, have given the desired results. It is good to see that the agricultural production in the country continues to increase steadily with an infusion of new technologies.

The Twelfth Plan aims at poverty reduction and inclusive growth which is broad-based, provides significant improvement in health outcomes, universal access to school for children, increased access to higher education and improved standards of education, including skill development. Today, the majority of the youth of rural areas are migrating to urban areas in search of gainful employment which is a matter of great concern. The reason is that the profit margin from farming is declining or is not at par with other sources of employment. The question before us, therefore, is how to make agriculture an attractive enterprise for the youth and help to save our agriculture? Our institutions of higher agricultural education have introduced programmes for entrepreneurial and skill development, a right step in this direction.

I am sure that esteemed members of the ICAR Society, representing different states of the country, would share their views on issues confronting the agricultural development and also take necessary initiatives to make agriculture an instrument of bringing rural prosperity.

My best wishes for a successful AGM.

Thank you!